International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तुलसीदास के साहित्य में अध्ययन पद्धतियाँ

डॉ0 रंजीत कौर
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा-विभाग
खुनखुन जी गर्ल्स डिग्री कालेज,लखनऊ

यद्यपि आधुनिक युग में अध्ययन की अनेक पद्धतियाँ प्रचलित हैं, किन्तु उनमें से अधिकांश विद्यालयों से ही सम्बन्धित हैं और ये विद्यालय भी बड़े-बड़े नगरों के प्रदूषण और कोलाहलपूर्ण वातावरण में ही स्थित हैं। आजकल माण्टेसरी, किण्डरगार्टेन, प्रोजेक्ट डाल्टन आदि पाश्चात्य पद्धतियों के विभिन्न रूप नगरों के विद्यालयों में देखने को मिलते हैं। यद्यपि गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित बेसिक शिक्षा पद्धति भारतीय जीवन के लिए सर्वथा उपयुक्त है, किन्तु कुप्रबन्धन और तड़क-भड़क होने के कारण समाज में इसकी उपेक्षा होती जा रही है। अब प्राचीन भारत की तरह शिक्षा न तो गुरूकुलों या आश्रमों में दी जाती है ओर न ही परिवार के विभिन्न जनों द्वारा बच्चों को अपने ज्ञान और अनुभव से लाभ पहुंचाया जाता हैं विकास की इस अंधी दौड़ में किसी को फुरसत नहीं है। इसीलिए आज का ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान बनकर रह गया है।

तुलसी-साहित्य में शिक्षा का समन्वित आयाम प्रस्तुत हुआ है। इसलिए उनके साहित्य में जहाँ गुरूकुल या आश्रम विशिष्ट शिक्षा के केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त मनुष्य स्वानुभूति के द्वारा भी अनेक घटनाओं या स्थानों से अनुभव प्राप्त करते हुए अपने ज्ञान का विस्तार करता रहता है अर्थात् तुलसी-साहित्य में (आश्रम पद्धति एवं स्वानुभूति पद्धति की) व्यवस्था है।

(1) आश्रम पद्धति :

प्राचीन भारत में मुख्य रूप से गुरूकुल या आश्रम पद्धति द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी इसलिए उपनयन संस्कार के पश्चात् वटुक (विद्यार्थी) किसी विशेष गुरू के आश्रम में रहकर आश्रम के नियमों के अनुसार गुरू की सेवा करते हुए विद्याध्ययन करता था। इस

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रकार के आश्रमों में प्रायः द्विज जातियों (ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य) के छात्र ही अध्ययन करते थे। ये गुरूकुल किसी वनांचल या पर्वतांचल के स्वस्थ प्राकृतिक वातावरण में स्थित होते थे। यहॉ का वातावरण शान्त, एकान्त तथा प्राकृतिक संसाधनों से सुसम्पन्न होता था। आश्रम में अनेक आचार्य तथा एक कुलपति होता था। ऐसे आश्रमों में हजारों विद्यार्थी एक साथ शिक्षा प्राप्त करते थे। इन आश्रमों में विद्यार्थी के भोजन, वस्त्र का पूरा प्रबन्ध होता था। इनके आय के स्रोत निम्नांकित थेः-

1. प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग
2. कृषि कार्य
3. मधुकरी वृत्ति (भिक्षावृत्ति)
4. शासन द्वारा प्राप्त होने वाली सहायता।

प्राचीन भारत के इस प्रकार के प्रमुख गुरूकुलों में महर्षि सौनक (नैमिषारण्य), महर्षि गौतम (सिद्धाश्रम बिहार), महर्षि भरद्वाज (प्रयाग), महर्षि अत्रि (चित्रकूट), महर्षि संदीपनि (अवन्तिका या उज्जैन) आदि प्रसिद्ध हैं।

प्राचीन भारत में छोटे गुरूकुलों का भी वर्णन मिलता है जहॉ एक ही प्रमुख आचार्य द्वारा शिक्षा दी जाती थी। ये या तो किसी राज्य की सीमा के अन्तर्गत स्वतन्त्र अथवा राज्य द्वारा बनाये गये नियमों के आधार पर शिक्षा देते थे अथवा प्रकृति के सुरम्य वातावरण में विशेष शिक्षा देते थे। अयोध्या नगर के अति निकट गुरू वशिष्ट का आश्रम थ, जहाँ श्रीराम आदि रघुवंशी कुमारों ने शिक्षा प्राप्त की, अपने स्वतन्त्र नियमों के अनुसार शिक्षा प्रदान करता था, यहाँ गुरू की इच्छा सर्वोपरि थी। जबकि महाभारतकाल में गुरू द्रोणाचार्य का आश्रम केवल गुरूकल के राजकुमारों की शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विन्ध्य पर्वत महेन्द्र शिखर पर महान गुरू आचार्य परशुराम का आश्रम था जहाँ बड़े-बड़े आचार्यों तथा राजकुमारों ने धनुर्वेद की विशिष्ट शिक्षा प्राप्त की थी।

तुलसी-साहित्य में वशिष्ठ, अत्रि, भरद्वाज, वाल्मीकि, विश्वामित्र तथा अगस्त्य आदि के आश्रमों का वर्णन हुआ है। श्रीराम यद्यपि गुरू वशिष्ठ के आश्रम में ही शिक्षा प्राप्त करते हैं किन्तु वे भरद्वाज, अत्रि, वाल्मीकि, अगस्त्य आदि के आश्रमों में जाकर भी उनसे न केवल सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं, बल्कि उनसे विभिन्न दिव्यास्त्रों को प्राप्त करते हुए उनके प्रयोग और उपसंहार का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

यहाँ आश्रम पद्धति से प्राप्त होने वाली प्रमुख शिक्षण विधियों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

1. **प्रकृति-निरीक्षण द्वारा शिक्षा :**

आरम्भ से ही मनुष्य प्रकृति से बहुत कुछ सीखता आया है। तुलसी साहित्य में प्रकृति को एक आदर्श शिक्षिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य विभिन्न प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुरूप जीवन जीने की कला का ज्ञान अपने आप प्राप्त कर लेता है। तुलसी-साहित्य में प्रकृति द्वारा प्रत्यक्ष प्राप्त होने वाली शिक्षा का वर्णन मिलता है। राम द्वारा सीता के हरण पर प्रकृति द्वारा शिक्षा प्राप्त करने का प्रसंग प्रस्तुत है -

नारि सहित सब खग मृग बृंदा। मानहुँ मोरि करत हहिं निंदा।।
हमहि देखि मृग निकर पराहीं। मृगीं कहहिं तुम्ह कहँ भय नाहीं।।
तुम्ह आनंद करहु मृग जाए। कंचन मृग खोजन ए आए।।
संग लाइ करिनीं करि लेहीं। मानहुँ मोहि सिखावनु देहीं।।[1]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रकृति द्वारा माया की प्रबलता :

पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइअ मर्म।
मायाछन्न न देखिऐ जैसे निर्गुन ब्रह्म।।[2]

मछली के माध्यम से सच्चे प्रेम की प्रतीति :

मकर उरग दादुर कमठ जल जीवन जल गेह।
तुलसी एकै मीन को है सॉचिलो सनेह।।[3]

इसके अतिरिक्त किष्किंधा काण्ड के वर्षा-वर्णन प्रसंग में प्रकृति द्वारा मिलने वाली बहुविधि शिक्षा का वर्णन है।

2. देशाटन द्वारा शिक्षा :

सैद्धान्तिक ज्ञान को पुष्ट करने के लिए तथा प्रकृति, मानव तथा समाज के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि विविध पक्षों के स्वाभाविक ज्ञान के लिए पर्यटन या देशाटन का बड़ा महत्व है। इसीलिए गोस्वामी जी ने अपने चरित नायक श्रीराम को अयोध्या से लंका तक पद यात्रा करते हुए विविध स्थानों के प्राकृतिक और सामाजिक आदि विभिन्न पक्षों का स्वतंत्र अनुभव प्राप्त करते हुए दिखाया है। आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए उन्होंने अनेक महापुरूषों तथा श्रीराम द्वारा स्वीकृत अनेक स्थानों को तीर्थ की संज्ञा प्रदान करते हुए वहाँ भ्रमण का महान् पुण्य निरूपित किया है –

धन्य भूमि बन पंथ पहारा। जहँ तहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा।।[4]

देशाटन से अनेक लाभ होते हैं, यथा-1. विभिन्न भौगोलिक प्रकृति का ज्ञान, 2. विभिन्न मानव समाजों की सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान, 3. राष्ट्र की आर्थिक और राजनैतिक स्थितियों का ज्ञान, 4. तीर्थाटन से धार्मिक लाभ, 5. राष्ट्रीय एकता के संवर्धन में सहयोग।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

देशाटन को महत्व देने वाली तुलसी की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

प्रयाग – माघ मकरगत रबि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई।।[5]

हिमायल – सदा सुमन फल सहित सब द्रुम न नाना जाति।
प्रगटीं सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति।।[6]

नैमिषारण्य – तीरथ बर नैमिष बिख्याता। अति पुनीत साधक सिधि दाता।।[7]

चित्रकूट – अब चित, चेति चित्रकूटहिं चलु।।
कोपित कवि, लोपित मंगल-मगु, विलसत बढ़त मोह-माया मलु।।[8]
सब दिन चित्रकूट नीको लागत।
बरषा ऋतु प्रबेस बिसेष गिरि देखन मन अनुरागत।।[9]

काशी – मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानिकर।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न।।[10]

रामेश्वर – जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं।।[11] आदि

3. <u>प्रश्नोत्तर शैली द्वारा शिक्षा</u> :

आश्रम में गुरू द्वारा प्राप्त होने वाली शिक्षा की मुख्य पद्धति – प्रश्नोत्तर पद्धति ही थी। प्रारम्भ में आचार्यगण विद्यार्थी को सामान्य सेवा कार्य तथा प्राकृतिक निरीक्षण में लगाते थे। तत्पश्चात् जब उनमें जिज्ञासा वृत्ति का विकास हो जाता था, तब विद्यार्थियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए वे उनके ज्ञान का विकास करते थे। भरद्वाज का याज्ञवल्क्य से रामकथा का पान करना[12] और उत्तर स्वरूप याज्ञवल्क्य का भरद्वाज को रामकथा सुनाना।[13] पार्वती का शिव से प्रश्न करना।[14] और शिव का उत्तर स्वरूप रामकथा सुनाना।[15] गरूड़ का प्रश्न करना।[16] तथा काकभुशुण्डि का उत्तर देना।[17] इन प्रश्नोत्तरों के माध्यम से ही तुलसी की रामकथा का प्रस्तुतीकरण हुआ है। इसी प्रकार से अन्य प्रश्नोत्तरों में राम-विश्वमित्र।[18], अत्रि-श्रीराम[19], अनुसूया- सीता[20], शबरी-श्रीराम[21], नारद-श्रीराम[22], श्रीराम-वशिष्ठ आदि

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के प्रश्नोत्तर सम्यक् ज्ञानवर्धक हैं यद्यपि इनमें से अधिकांश प्रश्नोत्तर प्रकृति के सुरम्य अंचलों या आश्रमों में किए गए हैं, तो कुछ राज-भवनों या राजकीय उद्यानों में।

4. **संवाद पद्धति** : जहाँ प्रश्नोत्तर लम्बे-लम्बे व्याख्यानों या संवादों का रूप ले लेता है, वहाँ यह पद्धति देखने को मिलती है। तुलसी-साहित्य में चित्रकूट या अन्य पर्वतांचलों में ऐसे अनेक बड़े-बड़े संवादों की योजना हुई है, जिसके द्वारा ज्ञान-विज्ञान, धर्म तथा अध्यात्म के विभिन्न विषयों की समयानुकूल सुसंगत समीक्षा प्रस्तुत हुई है। इनमें श्रीराम-कैकेयी संवाद[23], श्रीराम-कौशल्या संवाद[24], श्रीराम-सीता संवाद, लक्ष्मण-निषाद संवाद[25], भरद्वाज-श्रीराम संवाद[26], श्रीराम-वाल्मीकि संवाद[27], वशिष्ठ-भरत संवाद[28], वशिष्ठ जी का भाषण[29], श्रीराम-भरत संवाद[30], जनक-वशिष्ठ संवाद[31] आदि प्रमुख है।

5. **प्रयोग और अभ्यास द्वारा शिक्षा** :

गोस्वामी जी ने प्राप्त हुए ज्ञान के बार-बार अभ्यास पर बड़ा बल दिया है –

शास्त्र सुचिंतित पुनि-पुनि देखिअ। भूप सुसेवित बस नहिं लेखिअ।।[32]

बेद पुरान बसिष्ठ बखानहिं। सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं।।[33]

इस प्रकार धनुर्विद्या का बारम्बार अभ्यास करते हुए उसके प्रयोग पत्र को बलवान बनाया गया है –

पावन मृग मारहिं जियँ जानी, दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी।।[34]

सर चारिक चारू बनाइ कसें कटि, पानि सरासनु सायकु लै।

बन खेलति रामु फिरैं मृगया, 'तुलसी' छबि सो बरनै किमि कै।।[35]

इस प्रकार गोस्वामी जी ने सैद्धान्तिक अध्ययन को पुष्ट बनाने के लिए जहाँ बारम्बार शास्त्र चर्चा की बात कही है, वहीं धनुर्ज्ञान के सम्यक् प्रायोगिक विकास के लिए निरन्तर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मृगया का वर्णन किया है। गोस्वामी जी ने श्रीराम के सामाजिक, राजनैतिक आदि अध्ययन को सुपुष्ट बनाने के लिए उसकी सुस्पष्ट प्रायोगिक भूमिका निर्मित की है

जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा।।

बेद पुरान सुनहिं मन लाई। आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई।।

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरू नावहिं माथा।।

आयसु मागि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरषइ मन राजा।।[36]

इस प्रकार गोस्वामी जी ने श्रीराम तथा सभी कुमारों की प्रमुख शिक्षा आश्रम पद्धति में ही सम्पन्न होने की भूमिका प्रस्तुत की है। श्रीराम जहाँ वशिष्ठ आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने के अतिरिक्त विश्वामित्र, भरद्वाज, अत्रि आदि के आश्रमों में जाकर जहाँ विभिन्न शास्त्रों व शस्त्रों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, वहीं प्रकृति-निरीक्षण, देशाटन तथा निरन्तर प्रयोग और अभ्यास के द्वारा अपने ज्ञान का विकास भी करते हैं।

(2) स्वानुभूति पद्धति :

भारतीय चिन्तकों के अनुसार ईश्वर का अंश होने के कारण जीव सहज चैतन्य है, किन्तु माया से ग्रस्त हो जाने के कारण उसकी इस चैतन्यता पर पर्दा सा पड़ जाता है। उसकी इसी चैतन्यता को निरन्तर निखार देने का कार्य शिक्षा करती है। बच्चे को आरम्भ में उसके माता-पिता और परिवारजन लोक व्यवहार और शास्त्र का सामान्य ज्ञान देते है। फिर वह गुरूओं से विधिवत् शिक्षा प्राप्त करते हुए अनेक विषयों में विशेषज्ञता धारण करता है। पुनः परिवार और समाज के बीच उसके ज्ञान का उपयोग होता है। इस उपयोग में उसकी प्रतिभा (कल्पना व तर्क शक्ति) का सम्यक् उपयोग होता है। यद्यपि वह अनेक गुरूओं के व्याख्यानों तथा अनेक पुस्तकों के अध्ययन से सैद्धान्तिक ज्ञान अवश्य प्राप्त कर लेता है, तथापि उसके ज्ञान की परीक्षा तो तब होती है जब किसी नवीन परिस्थिति के अनुकूल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उसकी तर्क या कल्पना शक्ति कार्य करने लग जाती है। किसी घटना या दृश्य के प्रति मनुष्य का क्या दृष्टिकोण है अथवा उसने उससे क्या सीखा है, यह उसकी जिस प्रतिभा पर आधारित होता है, उसे स्वानुभूति कहते है। इस प्रकार यदि यह माना जाए कि शिक्षा प्रमुख उद्देश्य मनुष्य में स्वानुभूति का विकास करना है, तो अधिक उपयुक्त होगा।

तुलसी-साहित्य में स्वानुभूति के लिए स्वानुभव, स्वमति, निजमति, जथामति आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। यद्यपि उनका शास्त्रों का अध्ययन अति विस्तृत था, किन्तु उनकी रचना प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण था - उनका 'क्वचिदन्यतोऽपि' या 'निजमति' का समन्वय, जिसे वे स्वीकार करते हैं -

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति।।[37]

गोस्वामी जी यह स्वीकार करते हैं कि बिना स्वानुभूति के स्वान्तः सुख हो ही नहीं सकता अर्थात् न तो हमें आनन्द मिल सकता है और न हम दूसरों को आनन्द दे सकते हैं। इस प्रकार अनेक विषयों का विधिवत् शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लेने के पश्चात् भी मनुष्य में स्वानुभूति का विकास न हो पाया, तो उसकी शिक्षा अधूरी है। इसे यों भी समझ सकते हैं कि पढ़े हुए ज्ञान में से अधिकांश हम भूल जाते हैं। कुछ को ही आत्मसात् कर पाते हैं। स्वानुभति वह आत्मसात् हुआ ज्ञान है, जो विशेष परिस्थितियों में तत्काल प्रकट होकर समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है और कुछ नया कर दिखाने की क्षमता का विकास करता है।

गोस्वामी जी ने अपने एवं प्रमुख पात्रों ने, जो स्वयं महान् शास्त्रज्ञ भी हैं, उन्होंने स्वानुभूति पर विशेष बल दिया है। जैसे-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तुलसीदास ने स्त्री-प्रेम और काम के प्रभाव को भली प्रकार अनुभव किया इसलिए लिखा –

कामहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम।।[38]

याज्ञवल्क्य – कहउँ सो मति अनुहारि अब उमा संभु संबाद।।[39]

शंकर – तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी। कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी।।[40]
मैं निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु।।[41]

काकभुशुण्डि – नाथ जथामति भाषेउँ राखेउँ नहिं कछु गोइ।
चरित सिंध रघुनायक थाह कि पावइ कोइ।।[42]

विभीषण – जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहउँ हित ताता।।[43] आदि

तुलसी के अनेक पात्रों ने अपने परिवार तथा समाज में घटने वाली विविध घटनाओं से बहुत कुछ सीखा। श्रीराम के पिता दशरथ की अनेक पत्नियाँ थीं, किन्तु उनकी मृत्यु का कारण भी उनकी पत्नी ही बनी, श्रीराम ने अपने जीवन में इसीलिए केवल एक पत्नीवृत का धर्मपालन किया। जहाँ दशरथ की मृत्यु पर उनकी एक भी पत्नी सती नहीं होती, वहाँ पति ने वनगमन पर सीता जी उनका साथ देकर सुन्दर आदर्श प्रस्तुत करती हैं। इसी प्रकार दशरथ जी ने बहुओं के हृदय में अपने परिवार का अनुराग बढ़ाने के लिए अपनी पत्नी को यह निर्देश दिया –

बधू लरिकनी पर घर आई। राखेहु नयन पलक की नाई।।[44]

तथा **बधू सप्रेम गोद बैठारीं। बार-बार हियँ हरषिदुलारी।।**

विनयपत्रिका, वैराग्य संदीपनी, दोहावली, कवितावली आदि रचनाओं में गोस्वामी जी की विस्तृत स्वानुभूति का परिचय मिलता है। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मृत्यु की निरन्तरता – तुलसी देखत अनुभवत सुनत न समुझत नीच।
चपरि चपेटे देत नित केस गहें कर मीच।।[45]

लोभ की प्रबलता – ग्यानी तापस सूर कवि कोबिद गुन आगार।
केहि कै लोभ विडंबना कीन्हि न एहिं संसार।।[46]

राम की उदारता – ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोऊ नाहीं।।[47]

गोस्वामी जी ने अपने प्रारम्भिक जीवन के कष्टों से बहुत कुछ सीखा। सभी ने उनका तिरस्कार किया। किन्तु जब राम ने उन्हें अपनाया तो संसार में भी उनका महत्व बढ़ गया। गोस्वामी जी का यह सघन अनुभव निम्नांकित पंक्तियों में व्यक्त हुआ है –

जायो कुल मंगन, बधावनो बजायो, सुनि
भयो परितापु पापु जननी-जनक को।
बारेंतें ललाल-बिललात द्वार-द्वार दीन,
जानत हो चारि फल चारि ही चनकको।।
तुलसीसो साहेब समर्थको सुसेवकु है,
सुनत सिहात सोतु बिधिहू गनक को।
नामु राम। रावरो सयानो किधौं बावरो,
जो करत गिरीतें गरू तृनते तनक को।।[48]

वस्तुतः स्वानुभूति वह शक्ति है जो कबि को महान बनाती है। जिस कवि में जिनती ही अधिक स्वानुभूति होती है, वह भी उतना ही महान् होता है। गोस्वामी जी की स्वानुभूति अत्यप्त विस्तृत है। इसीलिए उन्होंने संसार को कुछ नया ज्ञान दिया है और यह सिद्ध करने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का प्रयास किया है कि स्वानुभूति द्वारा प्राप्त हुई शिक्षा, जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है।

संदर्भ-ग्रंथ-सूची

1ण तुलसीदास, रामचरितमानस, 3/37/2.
2ण वही, 3/39/क दोहा.
3ण तुलसीदास, दोहावली, 318.
4ण तुसलीदास, रामचरितमानस, 2/136/1.
5ण वही, 1/44/2.
6ण वही, 1/65/दोहा.
7ण वही, 1/143/1.
8ण तुलसीदास, विनयपत्रिका, 24/1.
9ण तुलसीदास, गीतावली, 2/50/1.
10ण तुलसीदास, रामचरितमानस, 4/1 सोरठा.
11ण वही, 6/3/1.
12ण वही, 1/46.
13ण तुलसीदास, रामचरितमानस, 1/47.
14ण वही, 1/108, 110.
15ण वही, 1/120 ख.
16ण वही, 7/55.
17ण वही, 7/64/3.
18ण वही, 1/210/6.
19ण वही, 3/6/5.
20ण वही, 3/5.
21ण वही, 3/35, 36.
22ण वही, 3/42, 43.

23ण वही, 1/40/3, 4.
24ण वही, 2/52, 53.
25ण वही, 2/12, 13.
26ण वही, 2/07.
27ण वही, 2/125, 126.
28ण वही, 2/172, 173.
29ण तुलसीदास, रामचरितमानस, 3/254.
30ण वही, 3/260–264.
31ण वही, 3/291–294.
32ण वही, 3/37/4.
33ण वही, 7/26/1.
34ण वही, 1/205/1.
35ण वही, 2/27/1, 2.
36ण वही, 1/205/3, 4.
37ण वही, 1/7 श्लोक.
38ण वही, 7/130 ख.
39ण वही, 1/47/दोहा.
40ण वही, 1/114/3.
41ण वही, 1/120/घ सोरठा.
42ण वही, 7/123/ख.
43ण वही, 5/38/2.
44ण वही, 1/355/4.
45ण तुलसीदास, दोहवली, 248.
46ण वही, 261.
47ण तुलसीदास, विनयपत्रिका, 162/1.
48ण तुलसीदास, कवितावली – 1/73.

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A